# चिराग दिल का जलाओ बहुत अंधेरा है...

**मदनमोहन का जन्म बगदाद (इराक) में 25 जून 1924 को हुआ था। उनकी पहली फिल्म थी आंखें... मगर उन्हें सफलता मिली फिल्म भाई-भाई से। इसके बाद तो हिट फिल्मों की झड़ी लग गई। मदनमोहन के हिस्से में बड़ी संख्या में सिल्वर जुबिली फिल्में हैं, उससे कई गुना ज्यादा गीत हैं, जिन्हें आज भी ज्यादा माधुर्य के साथ सभी गुनगुना रहे हैं..**

न हीं पता, अगर संगीतकार मदनमोहन आज जीवित होते तो संगीत के मौजूदा पतनशील दौर को देखकर क्या करते? वह भी शायद अपने समकालीन-नौशाद, खय्याम, ओपी नय्यर की तरह समय के बदलने का इंतजार करते या टीवी चैनलों पर चल रहे म्यूजिक कार्यक्रमों में जज बनकर आने वाले गायकों को संगीत का मतलब और अनुशासन समझाते या फिर वह भी उस बाजार का हिस्सा बन जाते, जहां बेचना और बिक जाना एक जरूरी शर्त बन गया है, लेकिन मदनमोहन का अतीत और उनका पूरा जीवन यही बताता है कि उन्हें बाजार की समझ तब भी नहीं थी।

उन्होंने संगीत के सृजन में समय तो लगाया, बाजार को समझने की कभी जरूरत ही नहीं महसूस की। शायद यही कारण है कि मदनमोहन का संगीत फिल्मों के हिट का पर्याय बन गया था। व्यावसायिक फिल्में बड़ी संख्या में उन्हें मिलीं, लेकिन संगीत को बाजारू नहीं बनाया। वह अपनी जिद के लिए निर्माताओं से भी टकरा जाते थे। उनके लिए व्यक्तिगत संबंध अपनी जगह थे, संगीत को किसी की शर्तों में नहीं बांधते। 'जहां आरा' फिल्म के निर्माता ओमप्रकाश (चरित्र अभिनेता) एक गीत 'फिर वही शाम, वही गम वही तन्हाई...' को रफी की आवाज में गवाना चाहते थे, जबकि संगीतकार मदनमोहन का कहना था कि यह गीत तलत महमूद की आवाज में फिट बैठता है। इस बात पर दोनों में मतभेद गहरा गया। अंततः मदनमोहन ने अपने खर्च पर तलत महमूद की आवाज में वह गाना रिकॉर्ड कराया। इस नजर से देखें तो मदनमोहन अगर आज होते तो वह जमाने को कोसने या वनवास ले लेने की बजाय इस अंधेरे को दूर करने के लिए चिराग जलाने का सामूहिक सद्प्रयास करते। गुम हो जाना या संकट को देखकर पलायन कर जाना उनके स्वभाव में नहीं था। उनका होना ही एक मायने रखता।

उनका मात्र इक्यावन वर्ष की उम्र में इस दुनिया से चला जाना हिंदी फिल्म संगीत के लिए दुर्भाग्यपूर्ण साबित हुआ। जिस समर्पण और ईमानदारी से वह शास्त्रीय संगीत की सेवा करते रहे, उसी तल्लीनता से वह गजलों को भी बांधते थे। यह भी एक कारण था कि गजल किंग कहे जाने वाले तलत से उनकी खूब पटती थी। उस समय इंडस्ट्री में एक तिकड़ी बहुत लोकप्रिय हुई थी। मदनमोहन- राजेन्द्र कृष्ण-लता मंगेशकर। संयोग था कि तीनों के घर आसपास ही थे। लता जी तो इनकी राखी-बहन बन गई थीं। कई संगीतकारों ने माना था कि लता को लता बनाने में मदनमोहन के संगीत का सर्वाधिक योगदान है। मदनमोहन के हिस्से में बड़ी संख्या में सिल्वर जुबली फिल्में हैं। उससे कई गुना ज्यादा गीत हैं, जिन्हें आज और भी ज्यादा माधुर्य के साथ सभी गुनगुना रहे हैं। 'मेरी याद में तू न आंसू बहाना...' (मदहोश), 'कौन आया मेरे मन के द्वारे...' (देख कबीरा रोया), 'हमसफर साथ अपना छोड़ चले...' (आखिरी छांव), 'यूं हसरतों के दाग मोहब्बत में धो लिए...' (अदालत), 'बस्ती-बस्ती, पर्वत-पर्वत गाता जाए बनजारा...' (रेलवे प्लेटफार्म), 'आपकी नजरों ने समझा प्यार के काबिल मुझे...' (अनपढ़), 'जरूरत है जरूरत है जरूरत है...' (मनमौजी), 'बदली से निकला है चांद...' (संजोग), 'कभी न कभी कहीं न कहीं...' (शराबी), 'तू जहां जहां चलेगा...' (मेरा साया), 'लग जा गले से फिर ये हंसी रात हो न हो...' (वो कौन थी), 'ये दुनिया ये महफिल मेरे काम की नहीं...' (हीर रांझा), 'माई री मैं कासे कहूं पीर...' (दस्तक), 'चिराग दिल का जलाओ बहुत अंधेरा है...' (चिराग), 'तेरी आंखों के सिवा दुनिया में रखा क्या है...' (चिराग) सहित अनगिनत ऐसे गीत हैं, जिनमें दुनिया वालों ने मदनमोहन की प्रतिभा को देखा। उनकी यह प्रतिभा शुरू में ही संगीतकार श्याम सुंदर को दिखाई पड़ गई थी। श्याम सुंदर ने मदनमोहन को अपना सहायक बनाया था। 'अलिफ लैला' पूरी भी नहीं हुई थी कि संगीतकार श्याम सुंदर का निधन हो गया, तब मदनमोहन ने ही फिल्म को पूरा किया था। मदनमोहन को एसडी बर्मन अपने पुत्र की तरह मानते थे। बाद में जयदेव के साथ भी मदनमोहन के रिश्ते काफी मैत्रीपूर्ण रहे। मदनमोहन के संगीत का महत्त्व तब उभर कर सामने आया, जब एचएमवी ने लता मंगेशकर के सिल्वर जुबली कैरियर पर उनसे दस श्रेष्ठ गानों के चयन के लिए कहा। लता ने जो दस श्रेष्ठ गाने चुने, उनमें दो गाने मदनमोहन के थे। यह अकेला एक नाम था, जो रिकॉर्ड में रिपीट हुआ। गाने थे 'बैरन नींद न आए...' (चाचा जिंदाबाद) तथा 'लग जा गले...' (वो कौन थी)। उस रिकॉर्ड को जब रंग भवन में रिलीज किया गया तो सम्मान की हकदार सिर्फ लता ही नहीं हुई थीं, मदनमोहन भी हुए थे। मदनमोहन का जन्म बगदाद (इराक) में 25 जून, 1924 को हुआ था। उनके पिता राय बहादुर चुन्नीलाल तब वहां अंग्रेजी राज में एक बड़े पुलिस अफसर थे। वहां से वह रावलपिंडी लौटे और फिर भारत आ गए। बाम्बे आकर राय बहादुर चुन्नीलाल ने बाम्बे टॉकीज में महाप्रबंधक की नौकरी कर ली। जब बाम्बे टॉकीज का विभाजन हो गया, तब चुन्नीलाल फिल्मिस्तान स्टूडियो के संस्थापक सदस्य के रूप में सामने आए। चुन्नीलाल चाहते थे कि उनका बेटा मदनमोहन सेना में भर्ती हो, मगर मदनमोहन पर संगीत की धुन सवार हो चुकी थी। जब वह लखनऊ रेडियो में काम करने गए, तब उनका संपर्क वहां मजाज लखनवी, बेगम अख्तर तथा तलत महमूद से हुआ। गजल के प्रति आकर्षण वहीं बढ़ा, जो फिल्मों में कामयाबी की मिसाल भी बना। वह बरकत अली खान से भी काफी प्रभावित थे।

मदनमोहन की पहली फिल्म थी 'आंखें', जो 1950 में रिलीज हुई थी। मुकेश की आवाज में गाया 'प्रीत लगा के मैंने ये पल पाया...' ने मदनमोहन को रातोंरात चर्चा में ला दिया। मगर कमर्शियल तौर पर मदनमोहन 'भाई भाई' से हिट हुए, जो 1956 में रिलीज हुई थी। इस बीच हालांकि उनकी कई फिल्में आईं, जिनमें मदनमोहन स्थापित हो चुके थे। 'भाई भाई' के बाद तो हिट फिल्मों की झड़ी लग गई। एक बार मदनमोहन को पुरस्कार मिलने पर एक बड़े संगीतकार ने कुछ अटपटी टिप्पणी कर दी तो मदनमोहन ने गुस्से में कहा कि वह या तो अपनी बात वापस लें या उन्हें तीसरी मंजिल से नीचे धकेल दिया जाएगा, लेकिन संगीत की रिकॉर्डिंग के समय वह इतने धैर्यवान हो जाते कि सहयोगियों को यह देखकर हैरानी होने लगती। वह अपने वादकों को भी प्रयोग करने की आजादी देते, ताकि वह मन से काम कर सकें। वह मानते थे कि जहां शब्दों को प्रभावी होना है, वहां इंस्ट्रूमेंट का कम से कम प्रयोग किया जाना चाहिए। तभी तो सी रामचंद्र ने कहा था, मदनमोहन हर चीज की बारीकी तक जाते हैं। यह मदनमोहन के लिए एक बड़ा कांप्लीमेंट था। यह सच है कि इंडस्ट्री में जिसका सितारा एक बार डूब जाता है, वह डूबता ही चला जाता है। अमिताभ बच्चन अकेले एक अपवाद हैं। 1970 के दशक में, चाहे जो कारण हों, मदनमोहन शराब में डूब चले थे। उस दौरान उन्होंने हालांकि 'साहब बहादुर' और 'चालबाज' में संगीत दिया था, मगर उनमें मदनमोहन की अपनी छाप नहीं दिखाई पड़ी। दोनों फिल्में उनकी मृत्यु के बाद रिलीज हुई थीं। उनकी मृत्यु 14 जुलाई, 1975 को हुई। मदनमोहन को नजदीक से जानने वाले उन्हें कई रूपों में याद करते हैं। वह सिर्फ संगीतकार ही नहीं, गायक भी थे। इसके साथ-साथ वह छैल प्रेमी, अच्छे रसोइया भी थे। उनके यहां दोस्तों का जमावड़ा लगा ही रहता था। 'दस्तक' फिल्म के लिए उन्हें नेशनल अवॉर्ड मिला था।

■ आनंद भारती